Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 8 | August 2023

हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति

जी. कोदंडा रामुलु

एम. ए., हिन्दी प्रवक्ता, के.टि.एस. सरकारी महाविद्यालय, रायदुर्ग

प्रस्तावनाः

जब हम किसी भाशा के अस्तित्व या उसके प्रयोग की स्थिति पर चर्चा करते हैं, तो बात केवल उस भाशा के भाशिक विशेषताओं तक सीमित नहीं रह जाती, उसके साथ–साथ समाज और संस्कृति की चर्चा भी अपरिहार्य हो जाती है। भाशा और संस्कृति के इस संबंध को रेखांकित करते हुए अमेरिका की भाशा वैज्ञानिक 'रीता मई ब्राउन' [Rita Mae Brown], ने कहा था – "Language is the road map of a culture, it tells you where its people come from and where they are going".

वर्तमान समय में हिन्दी भाशा की दशा को देखते हुए रीता मई ब्राउन का यह कथन बिल्कुल उपयुक्त लगता है। वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण और उदारीकरण के परिणाम स्वरूप आज भारत में जिस संस्कृति और अपसंस्कृति विस्तार, देश के महा नगरों से लेकर गाँवों, कस्बों तक, हो रहा है, जो कि आज से सौ वर्श पहले अकल्पनीय था।

भारतीय संस्कृति :

भारत की संस्कृति बहुआयामी है। जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिंधुघाटी के सभ्यता के दौरान बनी, आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई। बौद्ध धर्म और स्वर्णयुग की भाुरुआत उसके अस्तगमन के साथ फली–फूली, अपने खुद की प्राचीन विरासत भाामिल हैं। इसके साथ ही पडोसी देशो के रिवाज, परंपराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति–रिवाज, भाशाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक दूसरे से पारस्पार संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण है।

भारत कई धार्मिक प्रणालियाँ जैसे कि हिन्दु धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म जैसे धर्मों का जनक है। इस मिश्रण से भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परंपराओं ने विश्व के अलग–अलग हिस्सों को भी बहुत प्रभावित किया है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ इस प्रकार हैं, वह संस्कृति, भाशा, धर्म, समाज, जाति व्यवस्था, परिवार, पशु, परंपरा एवं रीति, त्यौहार, भोजन, वस्त्रधारण, साहित्य, इतिहास, काव्य, प्रदर्शन कला, संगीत, नृत्य, नाटक और रंगमंच, मनोरंजन, खेल और दर्शन भास्त्र आदि।

भारतीय संस्कृति विश्व के इतिहास में कई दृश्टियों से विशेष महत्व रखती है। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है। हमारी संस्कृति प्राचीनतम के साथ–साथ अमरता की संस्कृति भी है। सर्वांगीण, विशालता, उदारता, प्रेम और सहिश्णुता की दृश्टि से संस्कृतियों की अपेक्षा अग्रणी स्थान रखती है। रंगोली भी एक परंपरागत कला है। जो कि भारतीय महिलाओं में बहुत लोकप्रिय है।

'भोजन' भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जो रोजमर्रा के साथ–साथ त्योहारों में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कई परिवारों में अपने समर्थ के अनुसार अलग–अलग पकवान होती है। भारत के भूगोल में संस्कृति और भोजन की एक पारिभाशिक विशेषता है। भारत में तीन राश्ट्रीय त्योहारों में (National Holidays in India) स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गाँधी जयंति और इन तीनों को हर्शोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार के धार्मिक, लोक संगीत, लोकप्रिय और भाास्त्रीय संगीत भाामिल हैं। भारतीय भाास्त्रीय संगीत की परंपरा हिन्दू ग्रंथों से काफी प्रभावित है। इसमें कर्नाटक और हिन्दुस्तान संगीत कई राग भाामिल हैं। संत पुरंदरदास को कर्नाटक संगीत का पिता माना जाता है। उन्होंने अपने गीतों का समापन भगवान पुरंदर विट्ठल के वंदन के साथ किया है।

इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति में वास्तुकला भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पश्चिम से इस्लामिक प्रभाव के आगमन के साथ ही भारतीय वास्तुकला में भी नए धर्म की परंपराओं को अपनाना शुरू हो गया। इस युग में बनी कुछ इमारतें हैं। फतेहपुर सिकरी, ताजमहल, गोलगुंबज, कुतुबमीनार, लाल किला आदि।

बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारतीय वास्तुकला ने पूर्वी और दक्षिण एशिया को प्रभावित किया है। मनोरंजन और खेल के क्षेत्र में भारत में खेलों की एक बडी संख्या विकसित की गई थी। आधुनिक पूर्वी मार्शल कला भारत में एक प्राचीन खेल के रूप में शुरू हुई, कुछ लोगों के द्वारा ऐसा माना जाता है कि – "यही खेल विशेषो में प्रेशित किये गए। बाद में वही खेल आधुनिक युग में उसका रूप बदल गया है। ब्रिटिश भाासन के दौरान भारत में आये कुछ खेलों अत्यंत लोकप्रिय हैं। हाँकी, फुटबाल और क्रिकेट आदि। विभिन्न युगों के दौरान भारतीय धार्मों का पूरे विश्व विशेषकर पूर्व में काफी प्रभाव पडा है। वैदिक काल के बाद पिछले 2500 सालों में दर्शन के कई विभिन्न अनुयायी वर्ग जैसे हिन्दु धर्म, बौद्ध धर्म के कई संप्रदाय विकसित हुए हैं। हालांकि भारत में तर्कवाद, बुद्धिवाद, विज्ञान, गणित, भौतिकवाद, नास्तिकता और अज्ञेयवाद आदि।

साहित्य और संस्कृति :–

साहित्य और संस्कृति का अविनाभाव संबंध है। एक दूसरे के प्रति आश्रित हैं। एक दूसरे को छोडकर किसी भी प्रकार प्रगति नहीं कर सकता। यदि हम एक समाज का प्रतिबिम्ब उसके साहित्य में पाते हैं, तो उस साहित्य में उस समाज की संस्कृति को स्पश्ट रूप से झलकती देखते हैं।

आचार्य जी. सुदर रेड्डी के अनुसार "हमारी भारतीय संस्कृतिवह संगम है, जिसमें कई संस्कृति रूपी नदियाँ आकर सम्मिलित हो गई हैं।" आदिकवि वाल्मीकी ने रामायण लिखकर तत्कालीन भारतीय संस्कृति के सजीव चित्र हमारी आँखों के सामने अंकित किए। आर्य संस्कृति के रमणीय चित्र हमारे दृश्य पटलों पर अपनी अमित छाप डाले बिना नहीं रह सकते।

व्यास महर्शि का 'महा भारत' तत्कालीन भारतीय जीवन का जीता–जागता चित्र है। बौद्ध और जैन साहित्य में उसकाल के जन समूह के मनस्तत्वोंकी प्रतिछाया हम देखते हैं। भारतीय संस्कृति को छोड भारतीय साहित्य में उसकाल केजन समूह के मनस्तत्वों की प्रतिछाया हम देखते हैं। भारतीय संस्कृति को छोड भारतीय साहित्य का अस्तित्व ही नहीं हैं। संस्कृति समाज की जान है, और उसकी भाान भी हैं। सभ्यता और संस्कृति के आधार के बिना किसी उन्नत साहित्य का निर्माण होना संभव नहीं है।

इन सब के अतिरिक्त हिन्दी भाशा का एक और महत्वपूर्ण गुण है, सर्वसमावे ाता। हिन्दी के भाब्द–भंडार में न केवल हिन्दी की बोलियों से आये भाब्द हैं, बल्कि देश–विदेश की अनेक भाशाओं के भाब्द भी इसमें हैं। हिन्दी के भाब्द–भंडार का मुख्य आधार संस्कृत है, तो अरबी, तुर्की फारसी, पुर्तगाली, अंग्रेजी के अतिरिक्त देश की अन्य भाशाओं ने भी हिन्दी की भाब्द संपदा को समृद्धि प्रदान करके योगदान दे रहे हैं, जैसे कि "मराठी (जावक), कन्नड (पुन चर्या), मारवाडी (नामे डालना), तेलुगु (बाध्यक), कश्मीरी (पंचाट) आदि।

उपसंहारः

संक्षेप में, भारतीय संस्कृति की भाँति हिन्दी भाशा भी अपनी प्राचीनता, निरंतरता, सहिश्णुता, लचीलेपन के गुणों केलिए सराही जाती रही हैं, इसीलिए विशेषो में हिन्दी भाशा भारत और भारतीय संस्कृति की पहचान के रूप में देखी जाती हैं। लगभग दो हजार मातृभाशाओं वाले इस संवृद्धिशाली देश में अलग–अलग भाशाओं में अलग–अलग प्रदेश बोलते हैं, पर हिन्दी में पूरा देश बोलता है। अतः हिन्दी भाशा के परिरक्षण का अर्थ है, भारतीय संस्कृति और भारतीयता का परीक्षण और हिन्दी भाशा के प्रचार–प्रसार का अर्थ है, भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार।

संदर्भ सूचीः

1. Rita Mae Brown, Starting from Scratch
2. www.goodreads.com/quotes.
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा. नगेंद्र